जो लोग गिरने से डरते हैं वह कभी भी जीवन में उड़ान नहीं भर सकते।

तेवर वही, अंदाज नया ......!

साप्ताहिक

उज्जैन टाइम्स

डाक रजिस्ट्रेशन नं. मालवा डिवीजन- L2/65/RNP/397/2024-2026

प्रधान सम्पादक : मनमोहन शर्मा

RNI No. 7583/61

● वर्ष : 63, अंक : 29 ● उज्जैन, मंगलवार दिनांक 16-04-2024 से 22-04-2024 तक ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 2 रुपये

मध्यप्रदेश की सबसे हाईप्रोफाइल सीटों में शामिल छिंदवाड़ा इस बार यूं तो अनेक कारणों से चर्चाओं में है, लेकिन पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के अपने इस दरकते किले को बचाने की चुनौती और भारतीय जनता पार्टी के इस संसदीय क्षेत्र के रूप में 29वां कमल हासिल करने के हरसंभव प्रयासों ने इसे समूचे राज्य में सर्वाधिक चर्चाओं का कारण बना दिया है। पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के सबसे दिग्गज नेताओं में से एक कमलनाथ के गृह क्षेत्र छिंदवाड़ा को भाजपा कई सालों से भेद नहीं पाई है। पिछले लोकसभा चुनाव में भी राज्य की 29 संसदीय सीटों में से एकमात्र यही सीट उसके हाथ से फिसली थी। यही कारण है कि हालिया विधानसभा चुनावों में प्रचंड जीत से बेहद उत्साहित भाजपा लोकसभा चुनाव में अब ये 29वां कमल खिलाने और इस संसदीय क्षेत्र में समूचे राज्य के विधानसभा चुनाव जैसे परिणाम दोहराने की कोशिश में है।

नाथ के सामने किला बचाना चुनौती, भाजपा 29वां कमल खिलाने को बेताब

हालांकि विधानसभा चुनाव में छिंदवाड़ा संसदीय क्षेत्र की सातों विधानसभाएं कांग्रेस के खाते में गई हैं, लेकिन भाजपा का दावा है कि इस सीट पर भी इस बार भगवा ध्वज फहरने वाला है। भाजपा की इन कोशिशों को पिछले दिनों तब और बल मिला, जब इस संसदीय क्षेत्र के अमरवाड़ा विधानसभा के कांग्रेस विधायक कमलेश शाह, छिंदवाड़ा के महापौर विक्रम अहाके और इस क्षेत्र के कद्दावर नेता और पूर्व मंत्री दीपक सक्सेना ने अपने समर्थकों के साथ कांग्रेस को अलविदा कह कर भाजपा का दामन थाम लिया। ये सभी नेता श्री कमलनाथ के बेहद करीबी माने जाते हैं। ऐसे में श्री कमलनाथ के सामने अब अपने इस दरकते किले को बचाने की बड़ी चुनौती है।

आपातकाल के समय से ही श्री कमलनाथ इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते आ रहे हैं। हालांकि हवाला कांड में 1995-96 में नाम आने के बाद श्री कमलनाथ ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। इसके बाद 1996 में यहां से उनकी पत्नी अलकानाथ सांसद चुनी गईं। श्री कमलनाथ के हवाला कांड में बरी होने के बाद उनकी पत्नी ने सांसद पद से त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद हुए उपचुनाव में श्री कमलनाथ को यहां भाजपा के सुंदरलाल पटवा से शिकस्त झेलनी पड़ी। हालांकि उसके बाद हुए 1998 में हुए आम चुनाव में एक बार फिर से श्री कमलनाथ सांसद चुन लिए गए। उसके बाद से ये सीट कांग्रेस के ही पास है।

कांग्रेस ने इस बार इस सीट से एक बार फिर श्री कमलनाथ के पुत्र नकुलनाथ को चुनावी मैदान में उतारा है। वहीं भाजपा यहां से भाजपा के जिलाध्यक्ष और छिंदवाड़ा विधानसभा से पार्टी के प्रत्याशी रहे विवेक बंटी साहू के भरोसे है। आदिवासी बहुल लेकिन सामान्य श्रेणी की इस सीट से इन दोनों को मिला कर कुल 15 प्रत्याशी चुनावी मैदान में हैं। यहां लोकसभा चुनाव के पहले चरण में 19 अप्रैल को मतदान होना है। ये संसदीय क्षेत्र सात विधानसभा क्षेत्रों से मिलकर बना है, जिनमें से तीन अनुसूचित जनजाति, एक अनुसूचित जाति सुरक्षित है। तीन सीटें सामान्य हैं। हालिया विधानसभा चुनाव में ये सभी कांग्रेस के खाते में गईं थीं।

छिंदवाड़ा के कांग्रेस नेताओं को भाजपा में शामिल कराने की प्रक्रिया के दौरान मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव और भाजपा की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा ने लगातार इस बात पर जोर दिया कि पार्टी इस बार 29 कमल के फूलों की माला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सौंपेगी। अपने इसी प्रयास को फलीभूत करने पार्टी ने अपने कद्दावर नेता और राज्य के कैबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय को छिंदवाड़ा संसदीय क्षेत्र का जिम्मा सौंपा है। श्री विजयवर्गीय लोकसभा चुनाव की घोषणा के साथ ही छिंदवाड़ा में डटे हैं और यहां हर बूथ पर कमल खिलाने के प्रयासों में जुटे हैं।

इसके साथ ही भाजपा के पूरे संगठन का इस सीट पर खासा जोर है। दूसरी ओर कांग्रेस इस सीट को पूरी तरह श्री कमलनाथ और उनके परिवार के भरोसे छोड़े हुए है। यही कारण है कि कांग्रेस के किसी बड़े नेता का इस संसदीय क्षेत्र में प्रचार के लिए आगमन नहीं हुआ। हालांकि श्री नकुलनाथ के नामांकन दाखिले के दौरान पार्टी की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष जीतू पटवारी यहां आए, लेकिन उसके बाद से पार्टी का कोई बड़ा नेता यहां नहीं पहुंचा।

ये सीट दो दिन से एक बार फिर उस समय बेहद चर्चाओं में आ गई, जब कथित तौर पर भाजपा प्रत्याशी से जुड़े एक मामले को लेकर पुलिस श्री कमलनाथ के आवास पर छानबीन के लिए पहुंची। इस मामले में दो लोगों पर मामला दर्ज होने ने इस सीट से जुड़ी राजनीति को और गर्मा दिया है।

कांग्रेस का दावा है कि लोकसभा चुनाव में छिंदवाड़ा एक बार फिर कांग्रेस पर ही भरोसा जताएगा। इस संबंध में पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी के मीडिया सलाहकार के के मिश्रा ने कहा कि छिंदवाड़ा को लेकर भाजपा की स्थिति देखते हुए ऐसा लग रहा है कि देश की कुल 543 सीटों में से चुनाव सिर्फ छिंदवाड़ा में ही हो रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि जिस निम्नतम स्तर पर भाजपा आ चुकी है, वह लोकतंत्र की लूट के खतरे का स्पष्ट प्रमाण है। प्रशासनिक और राजनीतिक आतंकवाद परोसकर मतदाताओं और कांग्रेस को डराया जा रहा है।

पत्नी का मॉर्डन लाइफस्टाइल गलत नहीं, गुजारे भत्ते से नहीं किया जा सकता इनकार-कोर्ट

मध्य प्रदेश हाई कोर्ट ने हाल ही में एक मामले की सुनवाई करते हुए यह माना है कि किसी पत्नी का मॉर्डन लाइफस्टाइल के साथ जीना गलत नहीं है और इस आधार पर उसे गुजारा भत्ता से भी वंचित नहीं रखा जा सकता। जस्टिस जीएस अहलूवालिया ने कहा कि कोर्ट किसी पत्नी को केवल इसलिए गलत नहीं ठहरा सकता क्योंकि पत्नी की मॉर्डन लाइफस्टाइल उसके पति की नजर में गलत है। कोर्ट ने कहा बिना किसी अपराध के पत्नी के आधुनिक जीवन जीने की बिल्कुल भी आलोचना नहीं की जा सकती। इसी के साथ कोर्ट ने भी कहा कि जब तक यह नहीं माना जाता कि पत्नी बिना किसी उचित कारण के अलग रह रही है, उसे भरण-पोषण से वंचित नहीं किया जा सकता।

दरअसल मध्य प्रदेश हाई कोर्ट ने एक शख्स ने याचिका दाखिल की थी। याचिका में उसने उस आदेश को चुनौती दी थी जिसमें उसे अपनी पत्नी को 5,000 मासिक गुजारा भत्ता देने का निर्देश दिया गया था।

हाई कोर्ट ने इस मामले में शख्स की याचिका खारिज करते हुए कहा, अपराध किए बिना आधुनिक जीवन जीने की बिल्कुल भी आलोचना नहीं की जा सकती। जब तक यह नहीं माना जाता कि पत्नी बिना किसी उचित कारण के अलग रह रही है, उसे भरण-पोषण से वंचित नहीं किया जा सकता। हाई कोर्ट ने कहा है कि याचिकाकर्ता ने केवल यही कहा है कि उसकी पत्नी को आधुनिक जीवन जीने की आदत थी जो उसे बिल्कुल पसंद नहीं था। इसके अलावा उसने ऐसा कुछ नहीं बताया जिससे यह साबित हो सके कि पत्नी बिना किसी वाजिब कारण के पति से अलग रह रही थी। कोर्ट ने कहा, अगर पति-पत्नी के बीच किसी बात को लेकर विवाद है तो कोर्ट केवल यही कह सकता है कि पत्नी अगर बिना किसी अपराध के अपना जीवन अपने हिसाब से जीना चाहती है तो इसमें कुछ गलत नहीं है।

शख्स ने जिस आदेश को हाई कोर्ट में चुनौती दी थी सतना कोर्च ने दिया था। कोर्ट मे उसके बच्चे को भी 3 हजार रुपए गुजारा भत्ता देने का आदेश दिया था। आदेश को चुनौती देते हुए, पति के वकील ने कहा कि पति एक बहुत ही रूढ़िवादी परिवार से है जबकि उसकी पत्नी एक बहुत आधुनिक लड़की है। अपनी इस बात को साबित करने के लिए उन्होंने पत्नी फेसबुक पोस्ट को सबूत के तौर पर पेश किया था।

सम्पादकीय

चुनाव में धनबल की ताकत

चुनावों में धनबल के बढ़ते चलन को लेकर लंबे समय से चिंता जताई जाती रही है। इसे रोकने के लिए सरकार और भारत निर्वाचन आयोग सतत प्रयत्नशील देखे गए हैं। मगर हकीकत यही है कि इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगने के बजाय यह हर बार कुछ बढ़ी हुई ही दर्ज होती है। इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इस बार आम चुनाव के पहले चरण का मतदान हुआ भी नहीं है और अब तक चार हजार छह सौ पचास करोड़ रुपए मूल्य की जब्ती की जा चुकी है। यह पिछले आम चुनाव में हुई कुल तीन हजार चार सौ पचहत्तर करोड़ रुपए मूल्य की जब्ती से बहुत अधिक है। अब तक हर रोज करीब सौ करोड़ रुपए मूल्य की जब्ती हो चुकी है निर्वाचन आयोग का कहना है कि मार्च से जब्ती का सिलसिला शुरू हुआ और अब तक हर रोज करीब सौ करोड़ रुपए मूल्य की जब्ती की जा रही है। अभी तक की गई जब्ती में करीब पैंतालीस फीसद हिस्सा मादक पदार्थों का है। इसमें केवल तीन सौ पंचानबे करोड़ रुपए नगदी जब्त की गई है। चार सौ नवासी करोड़ रुपए मूल्य की शराब और दो हजार उनहत्तर करोड़ रुपए मूल्य के मादक पदार्थ जब्त हुए हैं।

छिपी बात नहीं है कि चुनावों में काले धन को सफेद करने की कोशिशें तेज हो जाती हैं। राजनीतिक दल बहुत सारे ज्ञात-अज्ञात स्रोतों से चंदा इकट्ठा करते हैं। इसी से पार पाने के लिए चुनावी बांड का नियम बना था। मगर वह भी पारदर्शी साबित नहीं हुआ। उसमें काले धन और संदिग्ध चंदे का प्रवाह देखा गया। इसलिए सर्वोच्च न्यायालय ने उसे असंवैधानिक करार दे दिया। मगर चुनावी बांड से आए चंदे के हिसाब-किताब से यह तो पता चल गया कि कुछ राजनीतिक दलों के पास भारी मात्रा में धन जमा हो गया है।

जाहिर है, जिन दलों के पास जितना अधिक धन है, वे उतना अधिक खर्च भी करेंगे। मगर चुनाव में मनमाने खर्च से समानता के अवसर का सिद्धांत बाधित होता है। इस पर अंकुश लगाना भारत निर्वाचन आयोग का दायित्व है। अच्छी बात है कि इस दिशा में वह प्रयास कर रहा है। मगर धनबल से जनबल को प्रभावित करने की प्रवृत्ति इस कदर बढ़ती गई है कि प्रत्याशी और पार्टियां न केवल निर्वाचन आयोग द्वारा तय सीमा से अधिक खर्च करने, बल्कि मतदाताओं को चोरी-छिपे नगदी और शराब, मादक पदार्थ, महंगे उपहार आदि देकर प्रभावित करने की कोशिश भी करती हैं। विचित्र है कि इसमें स्थानीय प्रशासन भी उनका सहयोग करता है। इस चुनाव में पार्टियों की मदद करते एक सौ छह सरकारी अधिकारी अब तक पकड़े जा चुके हैं। इस बार चुनाव की तारीखों की घोषणा से पहले ही निर्वाचन आयोग अवैध धन के प्रवाह पर रोक लगाने के लिए निगरानी दलों के गठन का एलान कर दिया था। अच्छी बात है कि वे निगरानी दल मुस्तैदी से काम कर रहे हैं। मगर केवल जब्ती से राजनीतिक दलों और प्रत्याशियों की इस प्रवृत्ति को कहां तक रोका जा सकेगा, कहना मुश्किल है। इस तरह मादक पदार्थ और शराब बांट कर वे लोगों को नशे के गर्त में धकेल रहे हैं। जब तक उन पर कड़ी अनुशासनात्मक कार्रवाई नहीं होगी, उनमें शायद ही हिचक पैदा हो। मगर निर्वाचन आयोग को एक नख-दंत विहीन शेर बना कर रखा गया है। इसलिए राजनेता और राजनीतिक दल मनमानी से बाज नहीं आते।

श्रीराम ने अपनी मर्यादाओं को कभी तिलांजलि नहीं दी

विधि-विधान के अनुसार भगवान श्रीराम को दुष्ट राक्षसों का विनाश करने के लिए ही वनवास मिला था। उन्होंने अपने मानव अवतार में न तो भगवान श्रीकृष्ण की भांति रासलीलाएं खेलीं और न ही कदम-कदम पर चमत्कारों का प्रदर्शन किया बल्कि उन्होंने सृष्टि के समक्ष अपने क्रियाकलापों के जरिये ऐसा अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया, जिसकी वजह से उन्हें 'मर्यादा पुरुषोत्तम' कहा गया।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम में सभी के प्रति प्रेम की अगाध भावना कूट-कूटकर भरी थी। उनकी प्रजा वात्सल्यता, न्यायप्रियता और सत्यता के कारण ही उनके शासन को आज भी 'आदर्श' शासन की संज्ञा दी जाती है और आज भी अच्छे शासन को 'रामराज्य' कहकर परिभाषित किया जाता है।

श्रीराम का चरित्र बेहद उदार प्रवृत्ति का था। उन्होंने उस अहिल्या का भी उद्धार किया, जिसे उसके पति ने देवराज इन्द्र द्वारा छलपूर्वक उसका शीलभंग किए जाने के कारण पतित घोषित कर पत्थर की मूर्ति बना दिया था। जिस अहिल्या को निर्दोष मानकर किसी ने नहीं अपनाया, उसे भगवान श्रीराम ने अपनी छत्रछाया प्रदान की। लोगों को गंगा नदी पार कराने वाले एक मामूली से नाविक केवट की अपने प्रति अपार श्रद्धा व भक्ति से प्रभावित होकर भगवान श्रीराम ने उसे अपने छोटे भाई का दर्जा दिया और उसे मोक्ष प्रदान किया। अपनी परम भक्त शबरी नामक भीलनी के झूठे बेर खाकर शबरी का कल्याण किया। समूचे भारतवर्ष में प्रतिवर्ष चैत्र मास की शुक्ल पक्ष नवमी को रामनवमी का त्यौहार भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है, जो इस वर्ष 17 अप्रैल को मनाया जा रहा है। मान्यता है कि त्रेता युग में इसी दिन अयोध्या के महाराजा दशरथ की पटरानी महारानी कौशल्या ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को जन्म दिया था। रामनवमी के दिन श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या में उत्सवों का विशेष आयोजन होता है, जिनमें भाग लेने के लिए देशभर से हजारों भक्तगण अयोध्या पहुंचते हैं। अयोध्या के भव्य राम मंदिर में जनवरी में हुई भगवान श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा के बाद इस बार पहली बार रामनवमी बेहद खास होगी।

समूची अयोध्या नगरी इस दिन पूरी तरह राममय नजर आएगी और हर तरफ भजन-कीर्तन तथा अखण्ड रामायण के पाठ की गूंज सुनाई पड़ेगी।

रामनवमी के अवसर पर भगवान राम के दर्शन के लिए इस बार लाखों लोगों के अयोध्या पहुंचने का अनुमान है और इसके लिए खास प्रबंध किए गए हैं। महारानी केकैयी ने महाराजा दशरथ से जब राम को 14 वर्ष का वनवास दिए जाने और अपने लाड़ले पुत्र भरत को राम की जगह राजगद्दी सौंपने का वचन मांगा तो दशरथ गंभीर धर्मसंकट में फंस गए थे। वह

(रामनवमी पर विशेष)

बिना किसी कारण राम को 14 वर्ष के लिए वनों में भटकने के लिए भला कैसे कह सकते थे और श्रीराम में तो वैसे भी उनके प्राण बसते थे। दूसरी ओर वचन का पालन करना रघुकुल की मर्यादा थी। ऐसे में जब श्रीराम को माता केकैयी द्वारा यह वचन मांगने और अपने पिता महाराज दशरथ के इस धर्मसंकट में फंसे होने का पता चला तो उन्होंने खुशी-खुशी उनकी यह कठोर आज्ञा भी सहज भाव से शिरोधार्य की और उसी समय 14 वर्ष का वनवास भोगने तथा छोटे भाई भरत को राजगद्दी सौंपने की तैयारी कर ली। श्रीराम द्वारा लाख मना किए जाने पर भी उनकी पत्नी सीता जी और अनुज लक्ष्मण भी उनके साथ वनों में निकल पड़े। वनवास की यात्रा की शुरुआत श्रृंगवेरपुर नामक स्थान से प्रारंभ कर वहां से वे भारद्वाज मुनि के आश्रम में चित्रकूट पहुंचे। उसके बाद विभिन्न स्थानों की यात्रा के दौरान पंचवटी में उन्होंने अपनी कुटिया बनाने का निश्चय किया। यहीं पर रावण की बहन शूर्पणखा की नाक काटे जाने की घटना हुई। उसी घटना के कारण वहां खर-दूषण सहित 14 हजार राक्षस राम-लक्ष्मण के हाथों मारे गए। यहीं से श्रीराम व लक्ष्मण की अनुपस्थिति में लंका का राजा रावण माता सीता का अपहरण कर उन्हें अपने साथ लंका ले गया।

कहा जाता है कि जब सीता का विरह श्रीराम से नहीं सहा गया तो उन्होंने साधारण मनुष्य की भांति विलाप किया लेकिन हिम्मत न हारते हुए सीता जी की खोज में राम-लक्ष्मण जंगलों में भटकने लगे।

इसी दौरान उनकी भेंट श्रीराम के अनन्य भक्त हनुमान से हुई, जिन्होंने राम-लक्ष्मण को वानरराज बाली के छोटे भाई सुग्रीव से मिलाया, जो उस समय बाली के भय से यहां-वहां छिपता फिर रहा था।

श्रीराम ने बाली का वध करके सुग्रीव तथा बाली के पुत्र अंगद को किष्किंधा का शासन सौंपा और उसके बाद सुग्रीव की वानरसेना के नेतृत्व में लंका पर आक्रमण कर देवताओं पर भी विजय पाने वाले महाप्रतापी, महाबली, महापंडित तथा भगवान शिव के घोर उपासक लंका नरेश राक्षसराज रावण का वध कर सीता को उसके बंधन से मुक्त कराया और लंका पर खुद अपना अधिकार न जमाकर लंका का शासन रावण के छोटे भाई विभीषण को सौंप दिया तथा वनवास की अवधि समाप्त होने पर भैया लक्ष्मण, सीता जी व हनुमान सहित अयोध्या लौट आए।

एक ओर जहां रावण अन्याय, अत्याचार व अनाचार का प्रतीक था तो श्रीराम सत्य, न्याय एवं सदाचार के प्रतीक थे।

सीता जी के अपहरण के बाद भी श्रीराम ने अपनी मर्यादाओं को कभी तिलांजलि नहीं दी।

उन्होंने इसके बाद भी रावण को एक महाज्ञानी के रूप में सदैव सम्मान दिया और यह इससे साबित भी हुआ कि रावण की मृत्यु से कुछ ही क्षण पूर्व श्रीराम ने लक्ष्मण को रावण के पास ज्ञान अर्जन के लिए भेजा था।

विश्व शांति के लिए सनातन धर्म जरुरी

पूरे विश्व में आज विभिन्न देशों के नागरिकों में शांति का अभाव दिखाई दे रहा है एवं परिवार के सदस्यों के बीच भी भाईचारे की कमी दिखाई दे रही है। शादी के तुरंत बाद तलाक लेना तो जैसे आम बात हो गई है। आज कई विकसित देशों में तलाक की दर 60 प्रतिशत से भी अधिक है। बुजुर्ग माता-पिता की देखभाल करने वाला उनका अपना कोई साथ नहीं है। अमेरिका में तो लगभग 10 लाख बुजुर्ग नागरिक खुले में रहते हुए अपना जीवनयापन करने को मजबूर हैं। इन देशों में तो जैसे सामाजिक तानाबाना ही छिन्न-भिन्न हो गया है।

इसी प्रकार के अन्य कई कारणों के चलते आज सनातन हिंदू धर्म के प्रति विदेशी लोग आकर्षित हो रहे हैं, क्योंकि सनातन हिंदू धर्म का अपना एक अलग ही महत्व है। सनातन हिंदू धर्म में कुटुंब के प्रति वफादारी बचपन से ही सिखाई जाती है। भारत में आज भी संयुक्त परिवार की प्रथा प्रचलन में हैं, जिससे बच्चे अपने बचपन में ही अपने माता पिता की सेवा करने के संस्कार सीखते हैं और उन्हें पूरे जीवन भर अपने साथ रखने का संकल्प लेते हैं।

विश्व में कुछ अन्य धर्मों में बच्चों को बचपन में ही कट्टरता सिखाई जाती है एवं केवल अपने धर्म को ही सर्वश्रेष्ठ धर्म के रूप में पेश किया जाता है। इससे इन बच्चों में अन्य धर्मों के प्रति सद्भावना विकसित नहीं हो पाती है। कई बार तो अन्य धर्म को मानने वाले नागरिकों का धर्म परिवर्तन कर उन्हें अपना धर्म मानने को मजबूर भी किया जाता है। इसके ठीक विपरीत सनातन हिंदू धर्म किसी अन्य मजहब को मानने वाले व्यक्ति पर कभी भी कोई दबाव नहीं डालता है। सनातन हिंदू संस्कृति अन्य धर्मों के नागरिकों को किसी प्रकार का धर्म मानने की खुली स्वतंत्रता प्रदान करती है। ऐसा कहा जाता है कि जब इस दुनिया में कोई भी धर्म नहीं था तब इस धरा पर निवास करने वाले लोग केवल सनातन हिंदू धर्म का ही पालन करते थे।

सनातन हिंदू धर्म बहुत ही ज्यादा संयमित धर्म है जो किसी अन्य धर्म की ना तो उपेक्षा करता है और न ही वह अपने धर्म के वर्चस्व को सबके सामने रखने का प्रयास करता है। इसी कारण से कट्टरता के इस माहौल में आज पूरे विश्व में सनातन हिंदू धर्म के प्रति लोगों की आस्था एवं रुचि बढ़ रही है।

सनातन हिंदू धर्म आज विश्व में तीसरा सबसे बड़ा धर्म है और भारत में अधिकतर लोग इस धर्म को मानते हैं। एक अनुमान के अनुसार सनातन हिंदू धर्म इस पृथ्वी पर 10,000 वर्षों से हैं। लेकिन यदि वेदों और उपनिषदों में लिखी बातों को माने तो सनातन हिंदू धर्म की उत्पति लाखों वर्ष पहिले हुई थी उस समय ये सनातन धर्म के नाम से जाना जाता था। हिंदू धर्म को मानने वाले लोग भारत में रहते थे। इस धर्म को बहुत प्रभावशाली माना गया है। अन्य कुछ धर्मों के संस्थापक रहे हैं, जैसे ईसाई धर्म के संस्थापक के रूप में प्रभु यीशु को माना जाता है तथा इस्लाम धर्म के लिए मोहम्मद साहिब को संस्थापक माना जाता है और बौद्ध धर्म के लिए गौतम बुद्ध को संस्थापक जाना जाता है। परंतु हिंदू धर्म के बारे में कहा जाता है कि कुछ संतों एवं महापुरुषों ने एक होकर जीवन को सही तरीके से व्यतीत करने का तरीका विकसित किया था। सनातन हिंदू संस्कृति को, धर्म नहीं बल्कि यह, जीवन जीने का एक तरीका भी माना जाता था।

सनातन हिंदू धर्म का यह मानना है कि प्रभु परमात्मा ने इस धरा पर सबको खुलकर हंसने, उत्सव मनाने और मनोरंजन करने की योग्यता दी है। यही कारण है कि सनातन हिंदू धर्म में सबसे अधिक त्यौहार और संस्कार होते हैं। उत्सव, जीवन में सकारात्मक संदेश लेकर आते हैं और हमारे संस्कार मिलन सरिता को दर्शाते हैं। सनातन हिंदू धर्म की यही प्रक्रिया दुनिया पसंद करती है। तभी तो ब्रज की होली और कुम्भ के मेले का अवलोकन करने के लिए पूरी दुनिया से लोग भारत में आते हैं। यही एक कारण है कि आज पूरी दुनिया के कोने कोने में लोग हिंदू धर्म में अपनी रुचि दिखा रहे हैं।

हिंदू अमेरिकन फाउंडेशन के अनुसार, आबादी के लिहाज से दुनिया के तीसरे सबसे बड़े देश अमेरिका में अब हिंदूओं की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है और हिंदू वहां राजनैतिक रूप से भी सक्रिय हो रहे हैं। इसके अलावा, कोरोना महामारी के बाद से पूरे अमेरिका एवं विश्व के अन्य देशों में योग और ध्यान की ओर लोगों का आकर्षण बहुत बढ़ गया है। योग और ध्यान पूरे विश्व को सनातन हिंदू धर्म की ही देन है। सनातन हिंदू धर्म बिलकुल ही कट्टरपंथी धर्म नहीं है। अन्य धर्मों की तरह इसमें किसी भी प्रकार का सामाजिक दबाव नहीं हैं।

इस धर्म में धार्मिक शिक्षा के लिए कोई भी जोर जबरदस्ती नहीं है जैसा कि कुछ अन्य धर्मों में होता है। हिंदू धर्म मानता है कि शिक्षा सभी तरह की होनी चाहिए केवल धार्मिक आधार पर शिक्षा देना उचित नहीं है।

किसी भी बच्चे की शिक्षा में अगर संस्कार जुड़ जाए तो वह बच्चा बड़ा होकर एक जिम्मेदार नागरिक बनता है और वह एक अच्छा इंसान बनता है। सनातन हिंदू धर्म में परोपकार की भावना होती है। अन्य धर्मों की तरह यह केवल अपने वर्चस्व के बारे में नहीं सोचता है।

इंडोनेशिया जो कि एक मुस्लिम बहुल देश हैं वहां पर सनातन हिंदू धर्म से जुड़े संस्कार आज भी पाए जाते हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि यह देश हिंदू धर्म से कितना प्रभावित रहा है। मुस्लिम बहुल देश होने के बावजूद हिंदू धर्म का बहुत बड़ा प्रभाव यहां आज भी दिखाई देता है। मुस्लिम लोग भी अपना नाम हिंदू देवी-देवताओं के नाम पर रखना पसंद करते हैं। सनातन हिंदू धर्म कभी भी किसी नागरिक पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं डालता है। सनातन हिंदू धर्म कभी भी किसी को लालच देकर धर्म परिवर्तन नहीं करवाता है। परंतु, आज प्रत्येक वर्ष पूरे विश्व में बहुत से लोग अन्य धर्मों को छोड़कर स्वप्रेरणा से हिंदू धर्म अपना रहे हैं।

सनातन हिंदू धर्म में स्त्रियों को जितना सम्मान दिया जाता है उतना किसी भी अन्य धर्म में नहीं दिया जाता है। सनातन हिंदू धर्म में स्त्रियों की पूजा की जाती है। सनातन हिंदू धर्म में आस्था का मतलब है कि जीवन में उमंग, उत्साह, उल्लास और मानवता की ओर झुकाव। जहां भारत में सनातन हिंदू धर्म को मिटाने की नाकाम कोशिश की जाती है वहीं रूस, ब्रिटेन, अमेरिका, घाना, सूरीनाम जैसे देशों में हिंदू धर्म तेजी से फैल रहा है। सनातन हिंदू धर्म पूरी दुनिया को शांति का संदेश देता है।

कई देशों में तो आज सनातन हिंदू संस्कारों का अनुपालन करते हुए विशेष गांव स्थापित किए जा रहे हैं। आयरलैंड में 22 एकड़ का एक हिंदू आइलैंड बन गया है। इसे हरे कृष्णा आइलैंड का नाम दिया गया है। यहां निवासरत समस्त नागरिकों द्वारा सनातन हिंदू धर्म के प्राचीन रीति रिवाजों का पालन बहुत ही सहजता के साथ किया जाता है। सनातन हिंदू धर्म के वैदिक नियमों को सदा सदा के लिए जीवित रखने के लिए यहां पर रहने वाले सनातनी हिंदू, मांस का परित्याग का शाकाहारी भोजन गृहण करते हैं।

नशीले पदार्थों, शराब एवं सिगरेट आदि पदार्थों से भी दूर रहते हैं। सुबह एवं शाम मंदिरों में पूजा अर्चना करते हैं। उनका जीवन सादगी भरा रहता है तथा कृषि एवं गाय पालन करते हुए अपना जीवन यापन करते हैं। महिलाएं साड़ी पहनती है एवं पुरुष धोती कुर्ता धारण करते हैं।

इसी प्रकार के गांव जहां हिंदू सनातन संस्कृति का अनुपालन किया जाता है अन्य कई देशों यथा घाना, फीजी एवं अन्य कई अफ्रीकी देशों, सुदूर अमेरिका, यूरोप के देशों, आदि में भी तेजी से फैलते जा रहे हैं।

इसी प्रकार, कजाकिस्तान एक मुस्लिम देश है। यहां की 65 प्रतिशत से अधिक आबादी इस्लाम को मानने वाले लोगों की है। परंतु, हाल ही के समय में यहां भी एक बड़ा बदलाव देखने में आ रहा है और यहां नागरिक सनातन हिंदू धर्म के प्रति आकर्षित होते दिखाई दे रहे हैं।

यहां सनातन हिंदू धर्म की लहर इतनी तेजी से उठी है कि हर तरफ हिंदू धर्म की आस्था एवं आध्यात्म का फैलाव दिखाई दे रहा है।

यहां के युवा विशेष रूप से भगवत गीता पढ़ने की ओर आकर्षित हो रहे हैं और हिंदू धर्म को समझने का प्रयास कर रहे हैं।

एक कजाकिस्तानी महिला मारीना टारगाकोवा की भगवत गीता को पढ़कर हिंदू धर्म के प्रति रुचि इतनी बढ़ी है कि अब उसने जैसे बीड़ा ही उठा लिया है कि वह कजाकिस्तान में सनातन हिंदू धर्म को फैलाने का प्रयास लगातार करती नजर आ रही है।

इतने सालों तक शाही जादूगर कहां छिपा था-पीएम मोदी

लोकसभा चुनाव 2024 के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने रविवार को संकल्प पत्र जारी किया है। इस कार्यक्रम के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मध्य प्रदेश के होशंगाबाद में एक रैली को संबोधित करने पहुंचे। वहां पीएम मोदी ने कहा, आग देश में नहीं बल्कि उनके (कांग्रेस के) दिलों में लगी है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर तंज कसते हुए पीएम मोदी ने कहा, इतने सालों तक यह शाही जादूगर कहां छिपा था?

मोदी की बात सुन लोग लगाने लगे ठहाके

आग देश में नहीं, उनके दिलों में लगी है...

पीएम मोदी ने कहा, अब तो कांग्रेस का शाही परिवार धमकी दे रहा है... मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बना तो देश में आग लग जाएगी। ये 2014 में भी बोलते थे... कभी आग लगी क्या? ये 2019 में भी बोलते थे... आग लगी क्या? ये राम मंदिर के लिए बोलते थे... कभी आग लगी क्या? ये 370 के लिए भी बोलते थे... आग लगी क्या? भाइयों-बहनों... आग देश में नहीं, आग-जलन उनके दिलों में लगी है। ये जलन उनके दिल और दिमाग में ऐसे भरी पड़ी है कि उन्हें अंदर से जलाती रहती है।

ऐसे छटपटा रहे हैं जैसे...

पीएम मोदी ने आगे कहा, ये जलन मोदी के कारण नहीं है, ये जलन 140 करोड़ लोगों को मोदी के प्रति प्रेम के कारण है। वो यह प्रेम भी सहन नहीं कर पा रहे हैं। ये लोग दस साल से सत्ता से बाहर हैं, दस साल में ऐसे छटपटा रहे हैं जैसे इनका सबकुछ लुट गया। जैसे उनकी भावी पीढ़ियों का सब लुट गया। कांग्रेस वाले अगर यही कारनामे करते रहेंगे न... तो यह जलन उनको इतनी जला देगी कि देश आगे कभी मौका देने को तैयार नहीं होगा।

शाही जादूगर कहां छिपा था...

कांग्रेस पर अटैक करते हुए पीएम मोदी ने कहा, मोदी की गारंटी वहां से शुरू होती है, जहां दूसरों से उम्मीद खत्म हो जाती है। इसलिए हताश कांग्रेस ऐसी घोषणाएं कर रही है जो खुद कांग्रेस के नेताओं को नहीं समझ आ रहा है। कांग्रेस के शहजादे ने अभी घोषणा की, आप भी सुनकर हंसोगे। मैं सुनाऊं? आपको जोर से हंसना पड़ेगा। उन्होंने घोषणा कि एक झटके में देश की गरीबी हटा दूंगा। अब बताओ भाई... हंसी आएगी या नहीं? ऐसे लोगों पर कोई भरोसा करेगा क्या? अरे देश पूछ रहा है कि आखिर यह शाही जादूगर इतने सालों तक कहां छिपा था। पीएम मोदी की यह बात सुन वहां मौजूद लोग हंसने लगे।

पीएम मोदी ने रैली में कहा, 2014 से पहले दस साल इन्होंने रिमोट से सरकार चलाई। और अब कह रहे हैं कि इनको एक झटके वाला मंत्र मिल गया है। ये झटके वाला मंत्र लाए कहां से हैं? मुझे बताइए... ये गरीबों का मजाक और अपमान है या नहीं? क्या झटके से गरीबी दूर होती है? ये क्या बोल रहे हैं जी? उनपर कोई भरोसा करेगा क्या? इसी के कारण यह हंसी के पात्र बन जाते हैं। देश उनको गंभीरता से नहीं लेता है।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा बैलेट पेपर से चुनाव नहीं

सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव में ईवीएम से पड़े वोटों के वीवीपैट पर्ची की 100 फीसदी गिनती या फिर बैलेट पेपर से चुनाव कराने की पुरानी व्यवस्था लागू करने को अव्यवहारिक होने का संकेत दिया।

सुप्रीम कोर्ट में वोटर वेरिफिएबल पेपर ऑडिट ट्रेल यानी वीवीपैट से निकलने वाली सभी पर्चियों का मिलान इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) से पड़े वोटों के साथ कराने की मांग वाली याचिका पर मंगलवार को सुनवाई हुई। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) और सामाजिक कार्यकर्ता अरुण कुमार अग्रवाल ने कोर्ट में याचिका दायर ईवीएम के वोटों और वीवीपैट पर्चियों की 100 फीसदी की मिलान की मांग की है। सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के दौरान बैलेट पेपर से चुनाव कराने की याचिका खारिज कर दी। सुप्रीम कोर्ट ने उन याचिकाकर्ताओं से सवाल किया, जिन्होंने ईवीएम के माध्यम से मतदान की विश्वसनीयता पर संदेह उठाया है। बैलेट पेपर से चुनाव कराना चुनौती सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस संजीव खन्ना और दीपांकर दत्ता की बेंच ने एडीआर की याचिका पर सुनवाई के दौरान 1960 के दशक में बैलेट पेपर से चुनाव के दौर को याद किया और कहा कि देश में फिलहाल मतदाताओं की संख्या 96 करोड़ से अधिक है। ऐसे में बैलेट पेपर या वीवीपैट की 100 फीसदी गिनती की व्यवस्था से चुनाव कराना बहुत चुनौती वाला काम होगा।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा, हम सभी जानते हैं कि जब बैलेट पेपर थे तो क्या होता था। आप जानते होंगे, लेकिन हम भूले नहीं हैं एडीआर की ओर से पेश वकील प्रशांत भूषण ने कोर्ट से कहा कि मौजूदा समय में एक विधानसभा क्षेत्र में सिर्फ पांच ईवीएम के संबंध में वीवीपैट पर्चियों का मिलान किया जाता है, जो बहुत कम हैं। बहस के दौरान जर्मनी का जिक्र बहस के दौरन प्रशांत भूषण ने कहा कि जर्मनी जैसे यूरोपीय देश बैलेट पेपर पर लौट आए हैं। जस्टिस दत्ता ने कहा कि जर्मनी की छह करोड़ आबादी की तुलना में भारत में 98 करोड़ पंजीकृत मतदाता हैं। जस्टिस दत्ता ने आगे कहा, यह (भारत में चुनाव) एक बहुत बड़ा काम है। मेरा गृह राज्य, पश्चिम बंगाल, जर्मनी से भी अधिक आबादी वाला है। हमें किसी पर भरोसा करने की जरूरत है। इस तरह व्यवस्था गिराने की कोशिश न करें याचिकाकर्ता अरुण कुमार अग्रवाल की ओर से पेश वकील गोपाल शंकरनारायणन ने कहा कि उन्हें आबादी की चिंता नहीं है, बल्कि ईवीएम में त्रुटियों की बहुत अधिक संभावना है। जस्टिस खन्ना ने कहा कि अगर उम्मीदवार कुल डाले गए वोटों और गिने गए वोटों के बीच विसंगति पाते हैं तो वे अपने अधिकार का इस्तेमाल कर सकते हैं। क्या है वीवीपैट जब कोई मतदाता अपना वोट डालने के लिए मतदान केंद्र पर जाता है तो वहां रखी ईवीएम के साथ एक और मशीन होती है इसके साथ एक ट्रांसपेरेंट बॉक्स रखा होता है। इसे वोटर वेरिफिएबल पेपर ऑडिट ट्रेल कहा जाता है। जब वोटर अपना वोट डाल देता है तो वीवीपैट से एक पर्ची निकलती है और वह बॉक्स में गिर जाती है।

चीन में अचानक बढ़ गई गधों की मांग

पड़ोसी देश चीन में गधों की मांग साल दर साल बढ़ती ही जा रही है। वहां हर साल 40 लाख से 60 लाख गधों की मांग है। यह दुनियाभर में गधों की कुल संख्या का करीब 10 फीसदी है। कुछ साल पहले तक अफ्रीकी देशों से गधों की खाल चीन को भेजी जाती थी लेकिन वहां प्रतिबंध लगने के बाद अब पाकिस्तान और अफगानिस्तान उस कमी को पूरा कर रहा है।

ब्रिटेन स्थित चैरिटी संगठन द डॉन्की सैंक्चुअरी द्वारा 2016 में की गई एक स्टडी में पाया गया कि चीनी व्यापार की वजह से दुनिया भर में एक वर्ष में 48 लाख गधों को मौत के घाट उतारा जा रहा है और यह अधिकांशतः अफ्रीकी देशों में हो रहा था लेकिन नाइजीरिया, यूगांडा, बोत्सवाना, तंजानिया जैसे देशों में 2022 में गधे के वध पर प्रतिबंध लगने के बाद अब उसकी भरपाई पाकिस्तान-अफगानिस्तान कर रहे हैं। ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी में दक्षिण एशिया अनुसंधान संस्थान के निदेशक मुहम्मद ए. कावेश के मुताबिक, पाकिस्तान से चीन भेजी जाने वाली अधिकांश गधों की खालें गुप्त व्यापार का हिस्सा हैं।

2022 में कराची से हांगकांग ले जाई जा रही लगभग 10 मीट्रिक टन गधों की खाल के एक शिपमेंट को जब्त कर लिया गया था। यह एक तरह से गधों की खाल की तस्करी हो रही थी, जिसमें शिपमेंट को शुरू में नमक और रूमाल ले जाने वाला घोषित किया गया था। दरअसल, चीन में खालों की इतनी बड़ी खेप का निर्यात ई जियाओ नाम की एक दवा बनाने के लिए दशकों नहीं सदियों से हो रहा है।

क्या है ई जियाओ?

चीन सरकार के समर्थित चाइना डेली अखबार के मुताबिक, ई-जिआओ एक ऐसी दवा है, जिसका उत्तरी शेडोंग प्रांत में 3,000 साल का पुराना और लंबा इतिहास रहा है। इसमें कहा गया है कि यह प्रांत चीन के ई-जियाओ उत्पादन का लगभग 90% भार वहन करता है। चीनी राज्य मीडिया के अनुसार, ई-जियाओ चीन की एक राष्ट्रीय सांस्कृतिक विरासत है और पारंपरिक चीनी चिकित्सा उद्योग में सबसे महत्वपूर्ण उत्पादों में से एक है।

500 ग्राम ई जियाओं की क्या कीमत?

चीन में सदियों से इस दवा का इस्तेमाल खून बढ़ाने, इम्यूनिटी बूस्ट करने और सौंदर्य प्रसाधन के रूप में इस्तेमाल किया जाता रहा है। इसे एक सुपरफूड के रूप में जाना जाता है। यह चीन में अमीरों का पसंदीदा व्यंजन रहा है और इसे महंगे उपहार के रूप में गिफ्ट के तौर पर दिया जाता रहा है। चीनी मीडिया की रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले एक दशक में इस दवा की कीमत में 30 गुना की बढ़ोत्तरी हुई है। आज के समय में 500 ग्राम ई जियाओ की कीमत 100 युआन से बढ़कर 2986 युआन यानी 35,190 रुपये हो गई है।

चीन में लगातार घट रहे गधे

चीनी मीडिया की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि चीन में 1992 में 1.10 करोड़ गधे थे जो अब 80 फीसदी गिरकर करीब 20 लाख रह गए हैं। गधों की संख्या में आई इसी कमी की वजह से ई जियाओ उद्योग ने विदेशों से गधों की खाल खरीद को प्रेरित किया है। गधों की खाल को सुखाकर निर्यात किया जाता है फिर चीन में ई-जियाओ उद्योग में उसे उबाला जाता है, जिससे एक खास किस्म के पेय पदार्थ बनता है। उसके मांस से दवा बनाई जाती है और बाद में खाल के अवशेष से कैंडी, केक और कई सौंदर्य सामग्री बनाई जाती है।

हमें मंजूर नहीं बदलाव, हमारे मदरसों के लिए बना दें अलग शिक्षा बोर्ड

जमीयत उलेमा-ए-हिंद के प्रमुख मौलाना महमूद मदनी ने 'मदरसों के स्वरूप में बदलाव की किसी भी पहल' को अस्वीकार्य बताते हुए धार्मिक शिक्षा केंद्रों के लिए स्वतंत्र शिक्षा बोर्ड की स्थापना पर जोर दिया। संगठन द्वारा आयोजित मदरसा संरक्षण सम्मेलन' को संबोधित करते हुए राज्यसभा के पूर्व सदस्य मौलाना मदनी ने आरोप लगाया, हमारी संस्थाओं को बंद करने या उनका स्वरूप बदलने के लिए पूरी ताकत लगाई जा रही है, लेकिन हम ऐसी कोई व्यवस्था को स्वीकार नहीं करेंगे। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय की आवश्यकताओं के अनुरूप ऐसी व्यवस्था स्थापित की जाएगी, जिसके तहत हमारी धार्मिक शिक्षा प्रभावित न हो और समकालीन शिक्षा की आवश्यकताएं भी पूरी हों।

जमीयत के एक बयान के मुताबिक, मदनी ने मदरसा संचालकों से किसी भी प्रकार की सरकारी सहायता लेने से बचने की गुजारिश करते हुए कहा कि मदरसों के लिए स्वतंत्र शिक्षा बोर्ड की स्थापना की जरूरत है और अगर ऐसी व्यवस्था बन जाए तो शिक्षा के क्षेत्र में एक नया अध्याय जुड़ जाएगा। मौलाना ने कहा, आज विभिन्न स्तर पर जिस तरह का रवैया अपनाया जा रहा है, उसके समाधान के लिए हमें एक दीर्घकालिक नीति बनानी होगी और ठोस और स्थिर उपाय करने होंगे। बयान के मुताबिक, सम्मेलन के दौरान प्रस्ताव पारित कर सरकारी एजेंसियों के कथित शत्रुतापूर्ण व्यवहार और मदरसा व्यवस्था में सुधार के बजाय अड़चन पैदा के प्रयासों की कड़ी निंदा की गई। बयान के मुताबिक, सम्मेलन के दौरान पारित प्रस्ताव में दावा किया गया है कि असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा और राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) के अध्यक्ष प्रियंक कानूनगो अपने बयानों से मदरसों को लेकर देश की जनता को गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं। बयान के मुताबिक, सम्मेलन में दारुल उलूम देवबंद, दारुल उलूम वक्फ देवबंद और मजाहिर उलूम समेत 50 से अधिक मदरसों के पदाधिकारियों ने शिरकत की। इसमें आरोप लगाया है कि 'दीनी मदरसों के खिलाफ सरकारी संस्थानों की कार्रवाई भेदभाव पर आधारित' है।

चुनावी मौसम में आसमान छू रहा हेलीकॉप्टरों का किराया

चुनावों के दौरान हेलीकॉप्टर और चार्टर्ड विमानों की डिमांड काफी बढ़ जाती है। ऐसे में इन दिनों लोकसभा चुनाव की सरगर्मियां तेज हैं। लोकसभा चुनावों के लिए राजनेता और राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि देशभर में भ्रमण कर रहे हैं, जिससे चार्टर्ड विमान और हेलिकॉप्टर की मांग 40 प्रतिशत तक बढ़ गई है। एक विमान के लिए शुल्क लगभग 4.5-5.25 लाख रुपये और दो इंजन वाले हेलिकॉप्टर के लिए लगभग 1.5-1.7 लाख रुपये है। वहीं चार्टर्ड विमान के लिए किराया 4.5 लाख रुपये से 5.25 लाख रुपये प्रति घंटे के बीच हो सकता हैं। यानी एक मिनट के लिए आठ हजार से भी ज्यादा की रकम वसूली जा रही है।

जहां सामान्य समय और पिछले चुनावी वर्षों की तुलना में मांग बढ़ी है, वहीं फिक्स्ड विंग विमान और हेलीकॉप्टर की उपलब्धता भी कम संख्या में है। कुछ परिचालक दूसरे कंपनी से विमान और हेलीकॉप्टर चालक दल के साथ लेना चाह रहे हैं। रोटरी विंग सोसायटी ऑफ इंडिया (आरडब्ल्यूएसआई) के अध्यक्ष (पश्चिमी क्षेत्र) कैप्टन उदय गेली ने पीटीआई-भाषा को बताया, हेलिकॉप्टर की मांग बढ़ी है और यह सामान्य अवधि की तुलना में चुनाव अवधि में 25 प्रतिशत तक अधिक है। मांग की तुलना में आपूर्ति कम है। आमतौर पर, राजनीतिक दल अपने उम्मीदवारों और नेताओं को कम समय में विभिन्न स्थानों, खासकर दूरदराज के इलाकों में पहुंचने के लिए हेलीकॉप्टर का उपयोग करते हैं। गेली ने कहा कि उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश जैसे बड़े राज्यों में हेलिकॉप्टरों का उपयोग अधिक देखा जा रहा है।

40 प्रतिशत अधिक हुई डिमांड

बिजनेस एयरक्राफ्ट ऑपरेटर्स एसोसिएशन (बीएओए) के प्रबंध निदेशक कैप्टन आर के बाली ने पीटीआई-भाषा को बताया कि चार्टर्ड विमानों की मांग पिछले आम चुनावों की तुलना में 30-40 प्रतिशत अधिक है। गेली ने कहा, आमतौर पर एकल इंजन वाले हेलिकॉप्टरों के लिए प्रति घंटा दर लगभग 80,000 से 90,000 रुपये है, जबकि दो इंजन वाले हेलीकॉप्टर के लिए यह लगभग 1.5 से 1.7 लाख रुपये है। चुनाव के समय, एक इंजन हेलीकॉप्टर के लिए दर 1.5 लाख रुपये तक और दो इंजन हेलीकॉप्टर के लिए 3.5 लाख रुपये तक होती है।

एक मिनट के लगते हैं हजारों रुपये

एक एकल इंजन वाले हेलीकॉप्टर में पायलट सहित सात लोगों के बैठने की क्षमता होती है, जबकि दो इंजन वाले हेलीकॉप्टर में 12 लोगों के बैठने की क्षमता होती है। चार्टर्ड विमान के लिए किराया 4.5 लाख रुपये से 5.25 लाख रुपये प्रति घंटे के बीच हो सकता हैं। बाली ने कहा कि चुनाव के दौरान चार्टर्ड विमान परिचालकों की कमाई सामान्य समय की तुलना में 15-20 प्रतिशत अधिक होने की संभावना है।

क्या है वोटरों के मन में?

भारत के लोकसभा चुनाव में 21 करोड़ से ज्यादा युवा मतदाता अपने वोट का इस्तेमाल करेंगे। इस वजह से युवा मतदाताओं की लोकसभा चुनावों में निर्णायक भूमिका रहेगी। भारत में लोकसभा चुनाव के लिए 97 करोड़ मतदाता अपना मताधिकार का इस्तेमाल करेंगे। सबसे अहम बात यह है कि चुनाव में पहली बार वोट देने वाले यानी 18-19 साल के मतदाताओं की संख्या 1.82 करोड़ है। इसके अलावा 20 से 29 साल के युवा वोटरों की संख्या 19.74 करोड़ है। ये युवा मतदाता किसी भी हार जीत में अहम भूमिका निभा सकते हैं समाचार एजेंसी एएफपी ने ऐसे चार युवा मतदाताओं से बात की जो पहली बार वोट डालने जा रहे हैं। उनके माध्यम से यह जानने की कोशिश है कि वे किसका समर्थन करेंगे। इसके साथ ही यह भी पता लगाने की कोशिश हुई कि कौन से ऐसे मुद्दे हैं जो उन्हें प्रभावित करते हैं। मुंबई यूनिवर्सिटी के 22 साल के छात्र अभिषेक धोत्रे ने कहा कि वह सरकार के सशक्त हिंदू राष्ट्रवाद के परिणामस्वरूप पूरे भारत में दिख रहे सांप्रदायिक मनमुटाव से नाखुश हैं। ऐसा कहा जाता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने भारत की बहुसंख्यक हिंदू आस्था को राजनीतिक जीवन में सबसे आगे खड़ा कर दिया है। इससे मुसलमानों और दूसरे अल्पसंख्यकों के मन में धर्मनिरपेक्ष देश में अपने भविष्य को लेकर चिंता पैदा हो गई है।

फिर भी, भारत की अर्थव्यवस्था बहुत तेज गति से बढ़ रही है और वह 2022 में पूर्व औपनिवेशिक शासक ब्रिटेन को पछाड़कर दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई। धोत्रे चाहते हैं कि मोदी और उनकी भारतीय जनता पार्टी फिर से जीत हासिल करे। उन्होंने एएफपी से कहा, जिस तरह से विकास हो रहा है। इंफ्रास्ट्रक्चर बढ़ रहा है और जो कुछ भी चल रहा है, मैं चाहूंगा कि मौजूदा सरकार बनी रहे कितने उत्साहित हैं युवा वोटर तमिलनाडु की रहने वाली 20 साल की त्रिशालिनी द्वारकनाथ सॉफ्टवेयर डेवलपर हैं और वह भारत के आर्थिक बदलावों का प्रतीक हैं। अब वह अपने गृह राज्य से टेक हब बेंगलुरु ट्रांसफर ले रही हैं। पहली बार वोट देने जा रही द्वारकनाथ कहती हैं, मैं भारतीय लोकतंत्र का हिस्सा बनने और पहली बार अपनी राय जाहिर करने को लेकर उत्साहित हूं। मुझे खुशी है कि मेरी आवाज मायने रखती है वह मोदी सरकार के कार्यकाल में हासिल उपलब्धियों की तारीफ करती हैं लेकिन कहती हैं कि लाखों बेरोजगार युवा भारतीयों को काम खोजने में मदद करने के लिए और अधिक कोशिश करने की जरूरत है। नौकरी है बड़ा मुद्दा पिछले साल अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में भारत की जीडीपी ग्रोथ रेट 8.4 फीसदी थी जबकि, सितंबर तिमाही में भारत ने 7.6 फीसदी की जीडीपी ग्रोथ दर्ज की थी। लेकिन अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन का अनुमान है कि 2022 में देश में 29 प्रतिशत यूनिवर्सिटी ग्रेजुएट बेरोजगार थे। यह दर उन लोगों की तुलना में लगभग नौ गुना अधिक है जिनके पास कोई डिप्लोमा नहीं है और आमतौर पर कम वेतन वाली नौकरियों या कंस्ट्रक्शन सेक्टर में काम करते हैं।

पहली बार वोट डालने वाले 22 वर्षीय गुरप्रताप सिंह निश्चित तौर पर बीजेपी को सपोर्ट नहीं करेंगे। गुरप्रताप एक किसान हैं और उनका नाता पंजाब से है। साल 2021 में पंजाब के किसानों ने तीन कृषि कानून के खिलाफ साल भर विरोध प्रदर्शन किया था जिसके बाद सरकार ने उन तीनों कृषि कानूनों को वापस ले लिया था। इसे एक तरह से प्रधानमंत्री मोदी की हार के तौर पर देखा गया। किसानों का कहना है कि उनकी मांगें अभी तक पूरी नहीं हुई है। गुरप्रताप कहते हैं, कई किसान विरोध प्रदर्शन के दौरान मारे गए। उन्हें इंसाफ नहीं मिला है देश के किसान चुनाव के दौरान अहम भूमिका निभाते हैं और उनका वोट सभी पार्टियों के लिए बहुत मायने रखता है। गुरप्रताप ने कहा, जो सरकार किसानों, युवाओं के बारे में सोचती है। वही सरकार सत्ता में आनी चाहिए उन्होंने कहा कि बीजेपी उस टेस्ट में फेल हो चुकी है। अधिकार के लिए आवाज उठाते ट्रांसजेंडर ट्रांसजेंडर समुदाय भी शामिल है। इनकी संख्या कई लाख होने का अनुमान है। हिंदू आस्था में तीसरे लिंग के कई संदर्भ हैं। 2014 में सुप्रीम कोर्ट ने ट्रांसजेंडर को पुरूष या महिला के बजाए एक तीसरे लिंग का दर्जा दिया था।

नगर निगम ने अतिक्रमण हटाया

उज्जैन। उज्जैन शहर भगवान श्री महाकालेश्वर की नगरी होने से यहां बाहर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शन हेतु शहर में पधारते है। शहर में आने वाले श्रद्धालुओं को कही भी कोई असुविधा ना हो यह सुनिश्चित किया जाना हमारा प्रमुख दायित्व है।

यह बात आयुक्त श्री आशीष पाठक द्वारा उपायुक्त एवं सहायक आयुक्त अन्यकर तथा नगर निगम रूमुवल गैंग प्रभारियों से कही गई। आपने कहा कि उज्जैन आने वाले श्रृद्धालु केवल श्री महाकालेश्वर दर्शन दर्शन ही नहीं करते अपितु अन्य प्रमुख मंदिर कालभेरव, मंगलनाथ, संदीपनी, रामघाट, सिद्धनाथ मंदिर आदि मंदिरों के भी दर्शन करते है। इस लिए महाकाल मंदिर से लेकर समस्त मंदिरों के पहुंच मार्गो पर किसी भी प्रकार अतिक्रमण ना हो यह सुनिश्चित किया जाना अत्यंत आवश्यक है। उक्त सभी मंदिरों के पहुंच मार्गो के साथ ही समस्त प्रमुख चौराहों पर भी किसी भी प्रकार का कोई अतिक्रमण न हो तथा चौराहे पूर्णतः साफ स्वच्छ एवम् सुंदर दिखे और श्रद्धालुओं को कभी भी कोई असुविधा न हो यह सुनिश्चित किए जाने का दायित्व हमारा है। आपने निर्देशित किया कि शहर में प्रमुख मार्गो, चौराहों, धार्मिक स्थल इत्यादि के आस पास किसी भी प्रकार का अतिक्रमण ना होने दिया जाए, जिन भी स्थलों पर अतिक्रमण किया हुआ है वहां से तत्काल अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही सख्ती के साथ करें। आयुक्त श्री आशीष पाठक द्वारा दिए निर्देश के क्रम में नगर निगम रिमूवल गैग द्वारा यातायात पुलिस के सहयोग से महाकाल मंदिर पहुंच मार्गों तथा सिविल हॉस्पिटल के पीछे से अतिक्रमण हटाएं जाने की कार्यवाही की गई। निगम अमले द्वारा कोट मोहल्ला चौराहे से महाकाल मंदिर शिखिर दर्शन स्थल तक किये गए अतिक्रमण को हटाते हुए सम्पूर्ण मार्ग को अतिक्रमण मुक्त किया गया। उक्त सम्पूर्ण मार्ग पर व्यापारियों द्वारा गुमटी, टेबल, सामग्री इत्यादि रख कर अतिक्रमण किया हुआ था जिससे सड़क अत्यंत ही छोटी एवं सकरी हो गई जिसके कारण श्रद्धालुओं को आवागत में कठिनाई होती है। अतिक्रमण हटने के बाद कोट मोहल्ला चौराहे से ही महाकाल मंदिर के शिखर दर्शन आसानी से किया जा सकता है।

निगम अमले द्वारा पुलिस प्रशासन के सहयोग से फ्रीगंज क्षेत्र अम्बेडकर प्रतिमा के पास पास, शिव मंदिर क्षेत्र, शहिद पार्क इत्यादि क्षेत्र में दुकानों के बाहर रखे सामनों को हटाने, ठेले एवं गुमटियों को हटाने की मुनादि की गई।

मुनादि उपरांत भी सामग्री, ठेले एवं गुमटिया नहीं हटाए जाने पर जप्त किये जाने की कार्यवाही की गई। सिविल हॉस्पिटल के पीछे रखी ठेले एवं गुमटियों को भी जप्त किये जाने की कार्यवाही की गई इसके साथ ही देवास गेट, तोपखाना इत्यादि क्षेत्रों से भी अतिक्रमण हटाया गया।

मतदान केन्द्रों पर निगम से सम्बंधित समस्त व्यवस्थाएं समय पूर्व सुनिश्चित की जाए-आयुक्त

उज्जैन। उज्जैन नगर निगम सीमा क्षेत्र के सभी मतदान केन्द्रों पर पेयजल, पथप्रकाश व्यवस्था सहित निगम से सम्बंधित अन्य समस्त व्यवस्थाओं के पुख्ता प्रबंध किये जाये। इस कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दास्त नहीं की जायेगी, जिन्हे कार्य के लिए अधिकृत किया गया है सम्बंधित कार्य हेतु वहीं अधिकारी जिम्मेदार होंगे।

उक्त निर्देश सोमवार को नगर निगम कार्यालय छत्रपति शिवाजी भवन में आयोजित टीएल बैठक में आयुक्त श्री आशीष पाठक द्वारा दिए गए। आपने सर्वप्रथम निर्वाचन कार्यो की समीक्षा करते हुए नगर निगम सीमा क्षैत्र में आने वाले मतदान केन्द्रों की जानकारी सम्बंधित अधिकारियों से प्राप्त करते हुए मतदान केन्द्रों पर विभागवार किये जाने वाले कार्यो की जानकारी प्राप्त की।

आपने उपायुक्त एवं झोनल अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे अपने झोन क्षैत्र अन्तर्गत आने वाले मतदान केन्द्रों का निरीक्षण कर वहां निगम द्वारा की जाने वाली व्यवस्थाओं का आंकलन करें यदि कही रगांई पुताई, खिडकी दरवाजे, रैम्प इत्यादि में मरम्मत की आवश्यकता हो तो उसे ठीक करवाया जाए।

समस्त मतदान केन्द्रों पर समस्त मुलभुत सुविधाएं अन्तर्गत महिला एवं पुरूष हेतु पृथक पृथक शौचालय की व्यवस्था, प्रत्येक मतदान केन्द्र पर पेयजल व्यवस्था, पथप्रकाश व्यवस्था, सफाई व्यवस्था, मतदान दल हेतु दरी, गादी, चादर की व्यवस्था, मतदान दलों पर आवश्यता अनुसार रैम्प, व्हिलचैयर, शामियाने इत्यादि व्यवस्था समय पूर्व ही सुनिश्चित कर ली जाए। किसी भी मतदान केन्द्र पर निगम से सम्बंधित कोई भी व्यवस्था अधुरी नहीं रहना चाहिए अन्यथा सम्बंधित अधिकारी के विरूद्ध नियमानुसार कार्यवाही की जावेगी।

सम्पत्ति विरूपण कार्यवाही निरंतर जारी रखे, स्वीप गतिविधि अन्तर्गत नागरिकों को मतदान हेतु प्रेरित किये जाने के क्रम में रैली, नुक्कड़ नाटक इत्यादि गतिविधियां आईईसी के माध्यम से निरंतर की

जाए, मतदान केन्द्रों मतदान केन्द्र क्रमांक, मतदान स्थल का नाम, मतदाता संख्या इत्यादि लिखे जाने की कार्यवाही शीघ्र आरंभ की जाए।

निर्वाचन कार्यो की समीक्षा उपरांत आयुक्त श्री आशीष पाठक द्वारा टीएल प्रकरणों की समीक्षा की गई। आयुक्त द्वारा टीएल मार्क किये गए प्रकरणों में उचित कार्यवाही नहीं होने से सम्बंधित अधिकारियों के विरूद्ध नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि यह रवैया बिल्कुल भी ठीक नहीं है मैरे द्वारा अत्यंत आवश्यक प्रकरणों को ही टीएल मार्क किया जाता है। विगत तीन माह में मेरे द्वारा केवल 89 टील ही मार्क की गई है परंतु एक दो प्रकणों को छोड कर किसी भी अधिकारी द्वार टीएल प्रकरणों पर ध्यान नहीं दिया गया।

आगामी टीएल बैठक में यदि यही स्थति रही तो सम्बंधित अधिकारी के विरूद्ध सख्त कार्यवाही की जाएगी। सम्बंधित अधिकारी टीएल प्रकरणों को प्राथमिकता में लेकर उसका निराकरण किया जाना सुनिश्चित करें।

आपने निगम से सम्बंधित कार्यो नामांकन प्रकरणों, जन्ममृत्य प्रमाण पत्र, लिज प्रकरण, सम्पत्तिकर इत्यादि आवश्यक कार्यो की जानकारी प्राप्त की तथा कहा कि इन सभी कार्यो पर आचार संहिता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, यह कार्य रूटिन प्रतियां के तहत निरंतर चलते रहना चाहिए तथा आम नागरिकों को किसी भी प्रकार की समस्या नहीं आनी चाहिए।

आयुक्त श्री आशीष पाठक द्वारा सीएम हेल्प लाईन पर प्राप्त शिकायतों के शीघ्र एवं संतोषजनक निराकरण में उज्जैन नगर निगम सम्पूर्ण प्रदेश में प्रथम स्थान पर होने से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों बधाई दी गई साथ ही उक्त स्तर को बनाए रखने हेतु निर्देशित किया गया।

बैठक में आयुक्त श्री आशीष पाठक द्वारा 3 अप्रेल से आरंभ हो रही पंचक्रोशी यात्रा अन्तर्गत निगम द्वारा की जाने वाली व्यवस्थाओं की जानकारी प्राप्त की गई। सम्बंधित झोनल अधिकारियों द्वारा बताया गया कि पंचक्रोशी मार्ग पर पेंचवर्क का कार्य किया जा रहा है।

जनसम्पर्क विभाग द्वारा नागचन्द्रेश्वर मंदिर सहित पड़ाव स्थलों पर शामियाने की व्यवस्था की जाती है। आयुक्त द्वारा निर्देशित किया गया कि पंचक्रोशी यात्रा के द्वारा जो भी परम्परागत व्यवस्थाएं श्रृद्धालुओं की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए निगम द्वारा की जाती है वे समस्त व्यवस्था समय पूर्व की जाए।

बैठक में अपर आयुक्त श्री आर.एस. मण्डलोई, श्री दिनेश चौऋषिया, उपायुक्त श्री संजेश गुप्ता, श्रीमती आरती खेडेकर, श्री पी.के. सुमन, श्री मनोज मोर्य, सहायक आयुक्त श्री प्रदिप सेन, श्रीमती पुजा गोयल, श्री तेजकरण गुनावदिया, कार्यपालन यंत्री श्री एन.के. भास्कर, श्री अनिल जैन, झोनल अधिकारी श्री मनोज राजवानी, श्री जितेन्द्र श्रीवास्तव, श्री साहिल मेदावाला, श्री राजकुमार राठौर सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रत्येक वोट जरूरी है, पर राज्य स्तरीय स्लोगन प्रतियोगिता

उज्जैन। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने बताया है कि लोकसभा निर्वाचन 2024 में मतदान का प्रतिशत बेहतर हो, इसके लिए मतदाता जागरूकता अभियान के अंतर्गत प्रत्येक वोट जरूरी है विषय पर राज्य स्तरीय स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है।

प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार राशि देकर सम्मानित किया जाएगा। इसके साथ ही 10 प्रतिभागियों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। प्रतियोगिता में प्राप्त प्रविष्टियों के मूल्यांकन के लिए एक राज्य स्तरीय चयन समिति का गठन भी किया गया है। चयन समिति के मूल्यांकन के बाद परिणाम घोषित किये जाएंगे। उन्होंने बताया कि प्रतिभागियों को अपनी प्रविष्टि mp.mygov.in पोर्टल पर भेजनी होगी। इसके साथ ही प्रतियोगिता से संबंधित जानकारी मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय की वेबसाइट पर भी उपलब्ध रहेगी। गुरूवार 25 अप्रैल तक प्रतिभागी अपनी प्रविष्टि भेज सकेंगे। प्रथम पुरस्कार-51,000 एवं प्रमाण पत्र, द्वितीय पुरस्कार-21,000 एवं प्रमाण पत्र, तृतीय पुरस्कार 11,000 एवं प्रमाण पत्र, 10 प्रतिभागियों को 5,100-5,100 रुपये का विशेष पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र दिया जाएगा। प्रतिभागी को मध्यप्रदेश का मूल निवासी होना चाहिए। एक प्रतिभागी की एक प्रविष्टि अधिकतम 25 से 30 शब्दों की मान्य होगी। प्रविष्टि मौलिक, अर्थपूर्ण एवं हिंदी भाषा में होना चाहिए। प्रविष्टि में किसी भी उत्तेजक या आपत्तिजनक शब्द का प्रयोग नहीं होना चाहिए। प्रतिभागी प्रविष्टि के साथ अपना नाम, पता, मोबाइल नंबर एवं ईमेल आईडी भी जरूर लिखें। पुरस्कार के लिए श्रेष्ठ प्रविष्टि का चयन मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय द्वारा गठित राज्य स्तरीय चयन समिति द्वारा किया जाएगा। चयन समिति का निर्णय अंतिम होगा। प्रतियोगिता के लिये प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि 25 अप्रैल 2024 है।

कैसे बचे सूर्य की तपिश से

भारतीय मौसम और जीवन दोनों में सूर्य और ऊर्जा की तपिश अपने चरमोत्कर्ष की ओर जाती हुई दिखाई दे रही है। विश्व भर में सभी आर्थिक एवं सामाजिक एजेंसियों के आंकड़े बता रहे हैं कि भारत की मानव शक्ति इस समय जिस तरह से कार्य कर रही है, वह भविष्य में श्रेष्ठ और सबसे आगे के भारत के होने का संकेत देती है। ऊर्जा की अधिकतम उपयोगिता को जानकर भारत के नागरिक इन दिनों अपने कार्य को करते हुए प्रायः सहज ही देखे जा सकते हैं। इस बीच ऊर्जा का दूसरा भी पक्ष देखने को मिल रहा है, इस ऊर्जा के अपार स्त्रोत के लिए सूर्य रश्मियां जिम्मेदार हैं। गर्मी समय बीतने के साथ अपने शीर्ष पर जाने के लिए प्रयासरत है और भारतीय हैं कि ऐसे में बिना सूर्य तपिश की चिंता किए वगैर दिन-रात अपने सुनिश्चित किए कार्य को पूर्ण करने में जुटे हुए हैं। ऐसे में यह जरूरी है काम और जीवन दोनों में संतुलन बना रहे । कहीं ऐसा न हो कि बदलते और तेज हीटवेव के इस मौसम में हम काम करने लायक भी न रह जाएं । इसलिए जरूरी है कि हीटवेब से आप भी बचें और अपने परिवार को भी बचाएं।

इस संबंध में भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने पहले ही बता दिया है कि आगामी जून तक गर्मी अपने चरम पर रहेगी। ऐसे में हीटवेव दौरान स्वस्थ रहने के लिए छोटे बच्चों, बुजुर्गों और प्रेग्नेंट महिलाओं को खास देखभाल की जरूरत है। इस हीट एक्सॉशन की वजह से मितली, उल्टी और यहां तक कि बेहोशी भी हो सकती है। उचित सावधानी के बिना, अत्यधिक गर्मी से हीट स्ट्रोक और इससे भी बदतर, मृत्यु हो सकती है। जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप, गर्मी की लहरें अधिक लंबी, और अधिक गंभीर होती जा रही हैं।जिसके लिए हमें सबसे पहले मानसिक रूप से तैयार रहना है, साथ ही इससे निपटने के लिए अपनी जरूरी तैयारी करके रखनी है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने हाल ही में गर्मी से जुड़ी बीमारियों को रोकने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए थे। गर्मी से बचने के लिए अकेले रहने वाले बुजुर्ग या बीमार लोगों की देखभाल करना, अपने घरों को ठंडा रखने, दिन के दौरान पर्दे और शटर या सनशेड का उपयोग करने और रात में खिड़कियां खोलने जैसे निर्देश दिए गए हैं। वहीं, यह भी कहा गया है कि लोगों को दिन के दौरान निचली मंजिलों पर रहने की कोशिश करनी चाहिए और शरीर को ठंडा करने के लिए पंखे और गीले कपड़ों का उपयोग करना चाहिए।

अब प्रश्न है कि हीट स्ट्रोक के संकेतों को कैसे पहचानें और यदि आवश्यक है तो आपको क्या कदम उठाने चाहिए? तो सबसे पहले हमें यह जानना आवश्यक है। वास्तव में जब लू चलती है तब तापमान लगातार कई दिनों तक सामान्य से अधिक रहता है। नमी के कारण अधिक गर्मी महसूस हो सकती है। वास्तव में हीट स्ट्रोक तब होता है जब शरीर अत्यधिक उच्च तापमान के संपर्क में आता है और शरीर का मुख्य तापमान 104 डिग्री फारेनहाइट (40 डिग्री सेल्सियस) और उससे अधिक तक बढ़ जाता है। निर्जलीकरण तुरंत होता है, इसके बाद अन्य लक्षण जैसे थकावट, मतली , उल्टी, सिरदर्द, भटकाव, भ्रम, चेतना की हानि और कभी-कभी कोमा भी हो जाता है। यह मस्तिष्क, हृदय, गुर्दे और अन्य अंगों को नुकसान पहुंचा सकता है। हीट स्ट्रोक का तुरंत इलाज न होने पर यह जानलेवा भी हो सकता है।

गर्म हवा के वायुमंडल में फंसने के कारण गर्मी की लहरें उत्पन्न होती हैं और यह एक प्राकृतिक मौसम घटना है। ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के परिणामस्वरूप जलवायु परिवर्तन के कारण गर्मी की लहरों की तीव्रता और आवृत्ति में वृद्धि हो रही है, जो गर्मी को लंबे समय तक रोके रखती है और यही बहुत अधिक गर्मी हर किसी के स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है। शिशु, बच्चे, गर्भवती महिलाएं और बुजुर्ग विशेष रूप से गर्मी के तनाव के प्रति संवेदनशील होते हैं। इसलिए ही सबसे पहले इन पर ही इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है । बहुत अधिक गर्मी के दौरान बच्चों में निर्जलीकरण खतरनाक या घातक भी हो सकता है। बच्चों के शरीर को वयस्कों की तुलना में तापमान को नियंत्रित करने में अधिक परेशानी होती है, और वे गर्मी से खुद को बचाने के लिए एक तरह से अपने परिवार के सदस्यों या जो उनकी देख रेख कर रहा है उस पर ही निर्भर रहते हैं।

इसी तरह से गर्भवती महिलाओं को भी अधिक खतरा होता है। बहुत अधिक गर्मी और निर्जलीकरण से शिशु का वजन कम होने, समय से पहले जन्म होने और यहां तक कि मृत शिशु के जन्म का भी खतरा बढ़ सकता है। गर्भवती महिलाएं स्वयं नकारात्मक रूप से प्रभावित हो सकती हैं और जल्दी प्रसव पीड़ा में जा सकती हैं, साथ ही गर्भकालीन मधुमेह और उच्च रक्तचाप भी विकसित हो सकती हैं। अतः सावधानी रखना ही वह उपाय है, जिससे कि इस तरह की गर्भवती महिलाएं अपना और अपने गर्भस्थ शिशु की देखभाल कर सकती हैं।

घर पर एक आपातकालीन किट रखनी चाहिए, जिसमें ओरल रिहाइड्रेशन नमक (ओआरएस) के पैकेट, एक थर्मामीटर, पानी की बोतलें, ठंडा करने के लिए गीला करने के लिए तौलिये या कपड़े, एक हैंडहेल्ड पंखा या बैटरी वाला मिस्टर और गर्मी के तनाव के लक्षणों की पहचान करने और उनका इलाज करने के लिए एक चेकलिस्ट हो। हसके साथ ही निकटतम स्वास्थ्य देखभाल प्रदाता या एम्बुलेंस/परिवहन सेवाओं के लिए संपर्क जानकारी नोट करके पहले से ही रखें, जिसके बारे में घर के सभी सदस्यों को भी जानकारी रहे कि फलां स्थान नंबर नोट करके रखा गया है, ताकि यदि घर पर कोई नहीं भी है तब भी जो हीटवेव की चपेट में आ गया है वह स्वयं भी फोन कर तत्काल स्वास्थ्य राहत अपने घर पर बुलवा सके ।

अधिक गर्मी से बचने के अहम उपायों में यह भी है कि अपने घर को ठंडा रखें। दिन के सबसे गर्म समय के दौरान अपने घर के खुले हिस्सों को भी पर्दे से बंद कर देना चाहिए और रात के समय घर को ठंडा करने के लिए खिड़कियां खोल देनी चाहिए । साथ ही आवश्यकतानुसार कूलर, पंखे और एसी का उपयोग जो भी आपके सामर्थ्य में है, उपयोग जरूर करें। साथ ही हीटवेव से बचने के लिए मुख्य उपायों में यह है कि दिन के सबसे गर्म समय में बाहर न जाएं। दिन में पहले या बाद में जब ठंडक हो तो अपनी गतिविधियों को व्यवस्थित करने का प्रयास करें। कहने का तात्पर्य यह है कि आप यदि ऑफिस में हैं तो कार्यालय में ही रहें और यदि घर अथवा किसी अन्य स्थान पर हैं तो कोशिश करें जब तक वातावरण में लू कम न हो जाए, सूर्य की तपिश कम न हो जाए, बाहर न निकलें। फिर भी यदि निकलना आवश्यक है तो सिर पर साफी या गमछा बांधकर, अपने साथ पानी रखते हुए बाहर जाएं। सिर पर सीधी सूर्य की किरणों से बचकर और बीच-बीच में दो घूंट पानी पीते रहते हुए आप अपने को बहुत हद तक हीटवेव के संकट में बचा लेते हैं। इस बारे में सुझाव यह भी है कि जब घर के या कार्यालय के बाहर रहें, तो सनस्क्रीन का उपयोग करें और छाया में रहने का प्रयास भी करें या सुरक्षा के लिए टोपी और छतरी का उपयोग भी आप सुविधानुसार करते रहें।

कभी-कभी लगता है कांग्रेस खुद चाहती है भाजपा जीते, गुलाम नबी आजाद को संदेह

डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव आजाद पार्टी (डीपीएपी) के अध्यक्ष गुलाम नबी आजाद ने अपनी पुरानी पार्टी कांग्रेस पर कड़ा प्रहार किया। उन्होंने कहा कि कभी-कभी उन्हें लगता है कि कांग्रेस ने भारतीय जनता पार्टी के साथ गठबंधन किया है क्योंकि वे पार्टी को मजबूत करने के लिए कोई कदम नहीं उठाते हैं।

उन्होंने कांग्रेस नेतृत्व की कमियों को गिनाते हुए कहा कि भाजपा की चुनावी जीत के पीछे यही विफलताएं जिम्मेदार हैं।

जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री आजाद ने कहा, कभी-कभी मुझे संदेह होता है कि कांग्रेस भाजपा के साथ मिली हुई है। इससे पहले कांग्रेस में व्यवस्था परिवर्तन के लिए 23 नेता संघर्ष कर रहे थे, लेकिन नेतृत्व कुछ नहीं सुन रहा था। जब मुद्दे उठाए गए तो उन्होंने कहा कि वे (बागी नेता) बीजेपी की भाषा बोल रहे हैं। कभी-

कभी मुझे लगता है कि वे (कांग्रेस) खुद चाहते हैं कि बीजेपी जीते।

उन्होंने आगे कहा कि देश और इस क्षेत्र में पार्टियों के लिए प्रमुख मुद्दे गरीबी, बेरोजगारी और महंगाई पर नियंत्रण हैं। आजाद ने कहा, जो भी पार्टी सत्ता में आती है, उनके लिए सबसे बड़ा मुद्दा गरीबी, बेरोजगारी और महंगाई कम करना है।

आजाद ने लोगों से भी अपील करते हुए कहा कि चुनाव धर्म पर नहीं बल्कि विकास पर लड़ा जाता है।

गुलाम नबी आजाद आज डोडा में एक जनसभा को संबोधित कर रहे थे।

कश्मीर को बर्बाद करने के लिए अलगाववादियों सहित सभी राजनीतिक दलों की आलोचना करते हुए आजाद ने कहा कि इन राजनेताओं के कारण जम्मू-कश्मीर में एक लाख लोग मारे गए हैं। उन्होंने कहा कि कश्मीर में आग लगाने के बाद सभी नेता घाटी छोड़कर बाहर जाकर बस गए। आजाद ने कहा कि लोगों को मुख्यमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान हुए विकास को याद रखना चाहिए।

डीपीएपी के अध्यक्ष गुलाम नबी आजाद ने सोमवार को आरोप लगाया कि पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला घाटी में केवल 'पर्यटक' के रूप में आते हैं, जबकि वह गर्मी के दिन लंदन में तो जाड़े के दिन किसी गर्म देश में बिताते हैं। आजाद ने एक स्टार प्रचारक के रूप में डोडा में पार्टी उम्मीदवार और पूर्व मंत्री जी एम सरूरी के समर्थन में चुनाव प्रचार किया।

बता दें कि उधमपुर में 19 अप्रैल, जम्मू में 26 अप्रैल, अनंतनाग-राजौरी में 7 मई, श्रीनगर में 13 मई और बारामूला में 20 मई को मतदान होगा।

भव्य शोभायात्रा निकली

उज्जैन। श्री पंचायती निरंजनी अखाडा, बडनगर रोड पर दिव्य श्री शिव शक्ति 108 कुण्डीय महायज्ञ की शुरूआत विशाल भगवा कलश यात्रा से हुई। श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर मां मन्दाकिनी पूरीजी महाराज निरंजनी अखाड़ा के सानिध्य में हजारों श्रद्धालुओं के साथ भगवा ध्वज पताका हाथों में लिए भव्य शोभा यात्रा निकली।

रामानुजकोट से प्रारंभ हुई शोभा यात्रा में छोटे बच्चों की अखाड़ा पार्टी हैरत अंगेज करतब दिखाते चल रही थी। यात्रा में मध्यप्रदेश के अलावा गुजरात, हरिद्वार, उत्तरप्रदेश सहित देशभर से संत एवं भक्तगण शामिल हुए।

सिंहस्थ में निकलने वाली पेशवाई के समान निकली शोभायात्रा में बग्गी में बैठे संत श्रीमहंत बलवीर गिरी जी महाराज बागंबरी गद्दी प्रयागराज, महंत श्री स्वेच्छा माताजी काठमांडू नेपाल, श्रीमहंत सत्यव्रतानंद सरस्वतीजी योगानंद फाउंडेशन, महंत श्री कल्कि पुरी जी महाराज योग गुरू भीलवाड़ा, स्वामी सवीदानंद जी महाराज अग्नि अखाड़ा हरिद्वार, संतश्री भगवान बापू जी, महंत श्री बोद्धा नन्द गिरीजी महाराज, स्वामी आनंद जीवन दास जी महाराज, दिगम्बर शक्ति गिरी जी महाराज, संत श्री निलेशानंद जी महाराज, संत श्री अचलनाथ जी महाराज, संत श्री सुरेशांनन्द जी महाराज, संत श्री ज्ञानेश्वरी पुरी महाराज, मां रूद्राणी पुरी, मां कल्याणी पुरी, मां मीरा पुरी, मां राजराजेश्वरी पुरी, मां अम्बिका पुरी, मनोरमा माताजी, योगमाता जी मां तुलसी माता जी, संत श्री कमल दास जी महाराज शहरवासियों को आशीर्वाद देते हुए चल रहे थे। रामघाट पर पूजन के बाद प्रारंभ हुई शोभायात्रा रामानुजकोट से कहारवाड़ी, गुदरी चौराहा, गोपाल मंदिर, ढाबा रोड़, छोटी रपट होते हुए निरंजनी अखाड़ा पहुंची।

यात्रा में रजनी नरवरिया के निर्देशन में अखाड़ा पार्टी रास्ते भर प्रदर्शन करती चली।

व्यवस्था में मुख्य रूप से श्री नागचन्द्रेश्वर भक्त मण्डल के केशर सिंह पटेल, महेश पटेल, शिवेन्द्र तिवारी, विजय मीणा, अश्विनी कुमार चौधरी, राजेश आंजना, अशोक शर्मा, राज जोशी, शोभा सोलंकी, विजय पटेल, हाकम सिंह पटेल, नरेंद्र शुक्ला, प्रकाश बैरागी, जीवन सिंह पटेल, अमरीश शुक्ला, पंडित अजय जोशी मेहरबान सिंह चावड़ा, राजेश पटेल, यशौदा शर्मा, लक्ष्मी संचोरा, कैलाशी मालवी, कैलाश मढ़ी महेश, विनीत गोतम, तोलाराम पटेल ने यात्रा को सुचारू रूप से चलाया और धर्मप्राण जनता से अनुरोध किया है कि इस दिव्य श्री शिव शक्ति 108 कुण्डीय महायज्ञ व संत समागम एवं सामुहिक विवाह में सभी धर्मानुरागी एवं संत समाज इसे सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान करें।

नारी साड़ी में घर के काम कर सकती है तो वह साड़ी में दौड़कर भी दिखा सकती है

उज्जैन। कोठी रोड उज्जैन पर साड़ी रन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें डॉक्टर, रिटायर्ड प्रोफेसर, फैशन डिजाइनर, बिजनेस वुमेन और हाउस वाइफ से लेकर स्कूलों बच्चियों और युवतियों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस प्रतियोगिता का संदेश था कि अगर, एक नारी बेहतर तरीके से घर को चला सकती है, साड़ी में काम कर सकती है तो वह साड़ी में दौड़कर भी दिखा सकती है।

मीडिया प्रभारी हंसा राजवानी ने बताया कि हर्षिता धनवानी एवं दिलीप धनवानी के नेतृत्व में आयोजित इस अनूठे कार्यक्रम में साड़ी पहनकर महिलाएं और युवतियां सड़क पर उतरीं तो लोग देखते ही रह गए। यह अनोखा नजारा रविवार को शहर में देखने को मिला। दरअसल, किड्डू प्ले स्कूल द्वारा शहर में साड़ी रन का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ महापौर मुकेश टटवाल, नगर निगम सभापति कलावती यादव, समाजसेवी एवं वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. सतविन्दर कौर सलूजा, डॉ. जया मिश्रा और सांसद पत्नी संध्या फिरोजिया ने किया। इस अवसर पर ऑक्सफोर्ड के डायरेक्टर दिलीप धनवानी, किड्डू प्ले स्कूल की संचालक हर्षिता धनवानी और पत्रकार डॉ. श्रुति जैन उपस्थित रहीं। साड़ी रन प्रतियोगिता में हर तबके की महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। डॉक्टर, रिटायर्ड प्रोफेसर, फैशन डिजाइनर, बिजनेस वुमेन और हाउस वाइफ से लेकर स्कूलों लड़कियां और युवतियों ने भी इस प्रतियोगिता में उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस प्रतियोगिता का संदेश यह था कि अगर, एक नारी बेहतर तरीके से घर को चला सकती है, साड़ी में काम कर सकती है तो वह साड़ी में दौड़कर भी दिखा सकती है। महिलाओं ने यह भी दिखाया कि वह अपने काम और स्वास्थ्य को लेकर कितनी सचेत रहती हैं। इस रेस में 300 से अधिक महिलाओं और युवतियों ने हिस्सा लिया।

आयोजक हर्षिता धनवानी के अनुसार बुजुर्गों ने युवाओं के साथ कदम से कदम मिलाया। दौड़ में सबसे ज्यादा आकर्षण का केंद्र बुजुर्ग महिलाएं और छोटी बच्चियां रहीं। बुजुर्ग महिलाओं ने सभी के साथ कदम से कदम मिलाकर मैराथन में भाग लिया। उन्होंने कहा कि मैराथन में भाग लेने का उनका उद्देश्य दूसरी बुजुर्ग महिलाओं के अलावा सभी को सेहत के प्रति जागरूक करना रहता है। बुजुर्ग होने का मतलब यह नहीं है कि आप लाचार हो गए हैं। अपने आप अपने आप को फिट रखें तो आप किसी पर निर्भर नहीं रहेंगे। यदि घर की महिला फिट रहेगी तो पूरा परिवार फिट होगा।

बदमाश गिरफ्तार

उज्जैन। सोशल मीडिया पर वीडियो के माध्यम से चाकू लहराकर भय का माहोल बनाने वाले दो आरोपियों को थाना महाकाल पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपियों के विरुद्ध प्रकरण दर्ज कर खटकेदार चाकू बरामद किये हैं। महाकाल पुलिस सोशल मीडिया पर भय फैलाने वाले बदमाशों को तलाश कर रही थी। इसी दौरान दोपहर 1.30 बजे बेगमपुरा पुल के पास मुखबिर की सूचना पर से दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया। आरोपियों के कब्जे से दो अवैध चाकू जप्त किए गए हैं। आरोपी फरदीन उर्फ चिन कादर 19 वर्ष निवासी बेगम बाग कॉलोनी एवं सखी उम्र 20 वर्ष निवासी बेगम बाग कॉलोनी मकबरे के पास उज्जैन के विरुद्ध थाना महाकाल पर अपराध क्रमांक 187/24 धारा 25 आर्म्स एक्ट का दर्ज कर विवेचना में लिया गया है। दोनों आरोपियों के पूर्व में एक-एक अपराध थाना महाकाल पर दर्ज है।

मतदाता जागरूकता हेतु प्रचार रथ को आयुक्त ने किया हरी झण्डी दिखाकर रवाना

उज्जैन। लोकसभा निर्वाचन 2024 अंतर्गत मतदान हेतु नागरिकों को प्रेरित किये जाने हेतु नगर निगम द्वारा निरंतर रैली, नुक्कड़ नाटक इत्यादि गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है।

इसी क्रम में मतदाता जागरूकता हेतु सी.एस.आर. गतिविधि के अंतर्गत मोयरा सरिया कंपनी के द्वारा दो प्रचार वाहन उपलब्ध नगर निगम को उपलब्ध कराए गए है। जिन्हें निगम आयुक्त श्री आशीष पाठक द्वारा हरी झंडी दिखाकर ग्रांड होटल परिसर से रवाना किया गया।

इस दौरान नगर निगम सहायक आयुक्त श्रीमती पूजा गोयल के साथ ही आई.ई.सी. के कर्मचारी उपस्थित रहे।

स्वताधिकारी/प्रकाशक मनमोहन शर्मा के लिये साप्ताहिक उज्जैन टाइम्स 110, तिरुपति एवेन्यू, होटल नत्रक्ष के पीछे, पंचक्रोशी मार्ग, उज्जैन (म.प्र.) से प्रकाशित एवं ज्योति ट्रेडर्स एवं प्रिन्टर्स न्यू रोड़, उज्जैन से मुद्रित।
● प्रधान सम्पादक : मनमोहन शर्मा मोबा. 9827233734 manmohan680@gmail.com (सभी वाद-विवादों का न्याय क्षेत्र उज्जैन रहेगा)। (म.प्र. शासन से 01-04-1997 से समाचार पत्र विज्ञापनों हेतु अनुमोदित)